अटलांटिक महासागर के उच्चावचीय विशेषता

प्रशांत के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महासागर है। इसका विस्तार उत्तर में ग्रीनलैंड से लेकर द० में अंटार्कटिका तक फैला हुआ है। इसकी आकृति अंग्रेजी के S अक्षर के समान है। जो उत्तर और दक्षिण में अधिक खुला हुआ तथा भूमध्यरेखा के समीप संकरा है।

अटलांटिक महासागर में महाद्वीपीय मग्नतट बहुत विस्तृत है। यूरोप और उत्तरी अमेरिका के तटवर्ती क्षेत्र में ~~मग्नतट~~ इसकी सर्वाधिक विस्तार है। जबकि अफ्रीका के पश्चिमी तट और द० अमेरिका के पूर्वी तट में मग्नतट का विस्तार अपेक्षाकृत कम है (कारणों की व्याख्या की जा चुकी है।)

अटलांटिक महासागर की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मध्य अटलांटिक कटक है। जो उत्तर में आइसलैंड से दक्षिण में बोवेट द्वीप तक लगभग 14000 Km तक लम्बा और 4000 m ऊँचा है। अटलांटिक महासागर के समान ही यह कटक भी S आकार वाला है। 55° उत्तरी अक्षांश के पास यह सर्वाधिक चौड़ा है। यहाँ इसे टेलीग्राफ पठार के नाम से जाना जाता है। इससे उत्तर इस कटक का विस्तार वेविल थॉमसन कटक के रूप में है। भूमध्यरेखा के समीप रोमांश गर्त इसे दो भागों में विभाजित करता है। उत्तरी भाग को डॉल्फिन रीज तथा दक्षिणी भाग को चैलेंजर रीज के नाम से जाना जाता है।

~~यद्यपि~~ यद्यपि मध्य महासागरीय कटक का अधिकांश भाग जलमग्न है तो भी इसकी अनेक चोटियाँ जल के ऊपर आकर छोटे-छोटे द्वीपों का रूप धारण कर लेती हैं, अजोर्स द्वीप, केप वर्डे द्वीप इसके उदाहरण हैं। सबसे नीची चोटी भूमध्यरेखा के समीप सेंट पॉल नामक छोटे द्वीप समूह की है। दक्षिणी अटलांटिक महासागर में एसेंशियन, ट्रिस्टा द कुन्हा, सेंट हेलेना और बोवेट आदि द्वीप है।

अटलांटिक महासागर के तटों और मध्य महासागरीय कटक के बीच कई गहरे सागरीय भाग हैं जिन्हें बेसिन कहा जाता है। साधारणत इसकी गहराई 4000 m है। लेब्राडोर बेसिन, उत्तरी पूर्वी अटलांटिक बेसिन, पश्चिमी यूरोप बेसिन, केपवर्डे बेसिन, ब्राजील बेसिन, अर्जेन्टीना बेसिन, अगुलहास बेसिन इनमें प्रमुख हैं।

अटलांटिक महासागर में द्वीपों की कमी है। न्यू फाउंडलैंड, ब्रिटिश द्वीप समूह, पश्चिमी द्वीप समूह, उत्तरी अटलांटिक महासागर में स्थित है, जबकि दक्षिणी अमेरिका के तट पर फॉकलैंड

की स्थिति है। मध्य अटलांटिक कटक के सहारे भी कई द्वीपों का निर्माण हुआ है। प्यूर्टोरिको तथा केमन, सैंडविच अटलांटिक महासागर अटलांटिक ~~महासागर~~ के के प्रमुख गर्त है।

अटलांटिक महासागर का तलीय उच्चावच